पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

सभी जांबाजों को पिट्स का सलाम!

हेमंत करकरे

अशोक कामटे

संदीप उन्नीकृष्णन

विजय सालस्कर

वर्ष २९ अंक १५ सोमवार, १दिसम्बर २००८ पृष्ठ १६ (साप्ताहिक) मूल्य दो रुपये

बता देंगे ताकत

मुट्ठीभर आतंकवादीयो ने मुंबई जैसे महानगर को बंधक बना कर पूरे देश को दहशतजदां कर दिया। राजनीतिक और प्रशासनिक स्तरों पर हुई गलतियों का खामियाज बेकसूर लोगों ने भुगता और बलि चढ़े कमांडोज। धैर्य था कि टूटने को पर जाबांजों की शहादत ने हिम्मत दी। मुंबई के छलनी होने पर एक बडा सवाल पूरे देश की सुरक्षा पर खडा हो गया। टेक्नोक्रेट्स आतंकियो की प्लानिंग और उनकी लाइफ स्टाइल हमारे लोगो से कितनी आगे हैं। हमारे लोगो की खासियत है तो उनका ज बा जिसने हमें जीत दिलाई। आतंकियों का खात्मा तो हुआ लेकिन हमारे सामने अब कई ऐसी चुनौतियां हैं जिन्हें हमें जीतना है। सुरक्षा साधनों को

उत्तम झंवर

अतिआधुनिक करने के साथ अमेरिका व अफगानिस्तान की तर्ज पर एक ऐसा कदम उठाना। जो नेस्तोनाबूत कर दे इन आतंकियों को। खून के निशानों में छिपी शहादत की कहानियों पर अब यू ही फूल नहीं चढ़ेंगे। इसके लिए कठोर व साहसिक कदम उठाना होगा।

इन दिशाहीन लोगो को बता सके कि ये ऐसा देश है जो आखिर सांस तक हथियार उठाने का मन नहीं बनाता। अगर मजबूर किया जाएगा तो विश्व को दिखा देंगे अपनी ताकत कि हम मिटा देने की ताकत तक रखते हैं। गुजरे हर लम्हे से सीख लेकर ये कोशिश भर करें कि अब अगला कदम क्या? और वो कदम ऐसा कि पूरी दुनिया को अपनी ताकत बना सकें।

खौफ के मंजर पर जज्बे की जीत

मुंबई में अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का जो ताण्डव साठ घण्टों तक देश ने देखा, वह एक लगभग अविश्वसनीय सचाई थी। सरकारी सूत्रों के अनुसार ठोस प्रमाण हैं, कि रबर की किश्तियों से जो फिदायीन हमार समुद्र तट पर उतार गए वे नवीनतम शस्त्रास्त्रों और संचार उपकरणों समेत महानगरी में हिंसा और आतंक फैलाने के लिए पाकिस्तान में बाकायदा सघन प्रशिक्षण देकर तैयार किए गए थे। धार्मिक जुनून की भट्टी में गढ़े गए ऐसे आत्मघाती दस्ते अप्रत्याशित और निर्मम वार से दहशत पैदा करते हैं। मानवाधिकार; करुणा या राष्ट्रीय सम्प्रभुता जैसे शब्दों का उनके लिए कोई मतलब नहीं होता। **फिर भी खौफ के इस भयानक मंजर को फतह करने को जज्बा हमारे एनएसपी, मार्कोस कमांडो सेना के अफसरों ने दिखाया है वह राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रहित के प्रति समर्पण की अभिनव मिसाल है.**

इसलिए फिदायीन हमलों के विरुद्ध और अपनी अखंडता की रक्षा के लिए दुनिया के हर देश को भयानक युद्ध ही नहीं, सीमित गृहयुद्ध भी लड़ने पड़े हैं। यह दर्दनाक अपरिहार्यता भारत को भी स्वीकार करनी पड़ेगी। अधिसंख्य लोगों की राय में राष्ट्र-राज्य को ऐसी घड़ियों में वज्र कठोर बन जाना चाहिए।

क्या वे राष्ट्र पर इतने बड़े संकट के वक्त राष्ट्रीयता के बुनियादी तकाजों को ताक पर धर कर अपनी पार्टी के पक्ष में बयानबाजी करते बड़े भले नजर आ रहे हैं? इस वक्त राष्ट्र की इमारत को पूरी करने के लिए विवेक, धीरज और कठोर श्रम की जरूरत तो है ही दुनिया के आगे एक दृढ़संकल्प और एकजुट देश की छवि बनाए रखना भी जरूरी है। राष्ट्रीय पार्टियों के बीच आंतरिक कलह के चलते सशस्त्र बलों और दमनकारी 'मर्दाना' कार्यशैली वाले सैन्य तानाशाहों के शासन तले हमारे पड़ोसी देश : पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, म्यांमार और अफगानिस्तान किस हाल में जा पहुँचे हैं?

यदि ऐतिहासिक लूटपाट, विदेशी हमलों और कत्लेआमों के बावजूद देश अपनी मानसिकता नहीं बदल सके, फौलादी संकल्प नहीं गढ़ पाए। तो सब अर्थहीन है. कंधार विमान अपहरण काण्ड से लेकर मुंबई के ताजा फिदायीन हमले तक विदेशी आक्रामक दस्तों के आगे हर बार हम इतने अफरातफरीग्रस्त, निर्णयविहीन और दलगत आरोप-प्रत्यारोपों से ग्रस्त नजर आते रहेंगे!

इस वक्त भी कश्मीर से केरल तक फिदायीनों की ओट में शत्रुपक्ष हमसे एक छायायुद्ध ही नहीं लड़ रहा है, उसका मुख्य उद्देश्य दुनिया के आगे अपना दमखम हमसे बीस बताना और हमें हास्यास्पद साबित करना है।

शिवराज पाटिल का इस्तीफा मंजूर

राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने केन्द्रीय गृह मंत्री शिवराज पाटिल का इस्तीफा स्वीकार कर लिया है और केन्द्रीय वित्त मंत्री पी चिदंबरम को नया गृह मंत्री नियुक्त किया है।राष्ट्रपति के प्रवक्ता ने रविवार को बताया कि वित्त मंत्रालय का कार्यभार फिलहाल प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को सौंपा गया है।

उल्लेखनीय है कि शिवराज पाटिल ने मुंबई में हुए आतंकवादी हमले की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए रविवार को प्रधानमंत्री को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था।प्रधानमंत्री ने पाटिल का इस्तीफा राष्ट्रपति के पास भेज दिया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। प्रतिभा पाटिल इस समय इंडोनेशिया की यात्रा पर हैं।

पी. चिदम्बर को गृह मंत्रालय की बागडोर

मुंबई में आतंकवादी हमले की वजह से चौतरफा आलोचना झेल रहे केंद्रीय गृह मंत्री शिवराज पाटिल ने रविवार को इस्तीफा दे दिया। इसके साथ ही वित्त मंत्री पी. चिदंबरम को गृह मंत्रालय का अतिरिक्त प्रभार सौंप दिया गया। पाटिल ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को अपना इस्तीफा सौंप दिया।

साबित करें कि हम राजनैतिक सामर्थ्यवान हैं

एक अत्यंत लचर आंतरिक सुरक्षा तंत्र के साथ हम आर्थिक महाशक्ति बनने का ख्वाब कैसे देख सकते हैं? इसमें कोई संदेह नहीं कि पिछले छह वर्षों में हमने जबर्दस्त आर्थिक छलांग लगाई है। हमारी आर्थिक विकास दर छह प्रतिशत से नौ प्रतिशत तक यों ही नहीं पहुंची। हमारी तुलना चीन और अमेरिका से होने लगी। हमें भविष्य की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था कहा जाने लगा। लेकिन उस अर्थव्यवस्था को पचा पाने लायक राजनीतिक सामर्थ्य हमारे भीतर नहीं है। मुंबई के आतंकी हमलों ने सचमुच हमारी कलई खोलकर रख दी है। यह ठीक है कि हमारे कमांडो अपनी जान पर खेलकर आतंकियों को पकड़ रहे हैं या उन्हें मार गिरा रहे हैं, लेकिन सीधा-सा सवाल यह उठता है कि इतनी बड़ी तैयारी की भनक तक हमारे सुरक्षा तंत्र को नहीं लगी तो क्यों? अब जबकि घटना घट गई है, सरकार के मंत्री तक यह दावा कर रहे हैं कि उन्हें इसकी पूर्व सूचना थी। तब उसे रोकने की कोशिश क्यों नहीं की गई? इसलिए हमारी लचर व्यवस्था की दुनिया भर में फजीहत हो रही है, तो इसमें आश्चर्य कैसा? एक पूर्व अमेरिकी खुफिया विशेषज्ञ ने तो शिवराज पाटील को अक्षम गृह मंत्री तक कह डाला है। चूंकि इस बार के आतंकी हमले में विदेशी नागरिक भी मारे गए हैं, इसलिए सचमुच विदेशियों ने इस घटना पर गंभीरता से ध्यान दिया है। दुनिया के कुछ मशहूर अखबारों ने अपने संपादकीयों में न सिर्फ आतंकवाद से लड़ने की भारत रणनीति पर संदेह जाहिर किया है, बल्कि भारत के राजनीतिक नेतृत्व पर भी सवालिया निशान लगा दिया है। यह ठीक है कि हम अमेरिकी रणनीति से खुद की तुलना नहीं कर सकते, लेकिन आखिर कब तक हम दूसरों पर उंगली उठाते रहेंगे? यदि कोई हमारे घर पर आकर हमारी पिटाई कर जाता है, तो उसका जवाब तो हमें ही देना होगा। इसके लिए भी हम कब तक दूसरों के आगे गुहार लगाते रहेंगे?

शेष अंतिम पेज पर